''प्रतिक्रांतिकारी बुर्जुवा वर्ग हर जगह और मौके पर धार्मिक उन्माद को उकसाने का प्रयत्न करता है. वास्तव में जनता की दृष्टि को उनकी मौलिक आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं से विचलित करने के लिए बुर्जुआ वर्ग ऐसे प्रयत्न करता है. श्रमिक वर्ग की एकता को भंग करने वाले इन प्रयत्नों का हमें दृढ़ता से विरोध करना है. ''

– लेनिन

मूल्य 1 रुपय

सांप्रदायिक द्वेष भावनाओं को उकसाकर लोगों में आपसी फूट और अलगाव पैदा करने वाले हिन्दू धर्मांधों के प्रयत्नों का प्रतिरोध कीजिये.
अल्प संख्यकों के बुनियादी अधिकारों की रक्षा कीजिये!!

भारत कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले) (पीपुल्सवार)

सांप्रदायिक द्वेष भावनाओं को उससाकर लोगों में आपसी फूट और अलगाव पैदा करने वाले हिन्दू धर्मांधों के प्रयत्नों का प्रतिरोध कीजिये.

अल्प संख्यकों के बुनियादी अधिकारों की रक्षा कीजिये!!

भारत कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले) (पीपुल्सवार)

भारत में आज नरसंहार हो रहा है. हिन्दू धर्मांध व कटटरवादी अपने ही देश भाइयों के खून से होली खेल रहे हैं. ये लोग पिछले कई वर्षों से उग्र सांप्रदायिकता की जहरीली लपटों को देश के कोने–कोने में पैला रहे हैं. ये, ''राम जन्म भूमि'' के नाम पर देश के धर्माधता से भरी मध्य युगीन अंधेरी गर्त में ढकेल रहे हैं. सांप्रदायिक फूट से भरे नारे लगाते हुये लोगों को भडकाने के जरिये हिन्दू सांप्रदायिक राज्य स्थापना के मंसूबे बांध रहे हैं और इसके लिये योजनाएं बना रहे हैं. आजकल देश में स्थित राजनैतिक और वित्तीय संकट को आधार बनाकर ये हिन्दू धर्मांध व कटटरवादी–अपनी ताकत बढ़ा रहे हैं. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस) विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और भारतीय जनता पार्टी भाजपा सांप्रदायिक जहर को पैलाने वाले कुत्साभरे ऐसे कार्यों को करने के कार्यभार का वहन कर रहे है.

ऊपर बताये सांप्रदायिकवादी व हिन्दू कटटरपंथी पार्टियां व दल संयुक्त रूप से राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद समस्या को देश के सामने उपस्थित कर रहे है. भाजपा, इस समस्या को चुनावी जुए में एक पासे की तरह इस्तेमाल करने के लिए षड़यंत्र रच रही है. कांग्रेस पार्टी भी भरसक, सांप्रदायिकता को अपने प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल कर रही है. अपने को ''धर्म निरपेक्ष'' कहते हुये तथा धर्मनिरपेक्ष होने का अभिनय करते हुये कांग्रेस पार्टी इधर हिन्दू धर्मांधों तथा उधर मुस्लिम धर्मांधों–दोनों सांप्रदायों के कटटरवादियों को पुचकारते हुये दोनों तरफ से वोट बटोरने का तिकड़म कर रही है. इधर जनता दल भी किसी से कम नहीं है. जनता दल ने पहले अपने वर्ग के निहित स्वार्थ प्रयोजनों को पाने के लिये सांप्रदायिक कटटरवादियों से हाथ मिला हर लाभ उठाने का प्रयत्न किया, फिर अपने इस प्रयत्न में नाकाम रहने के कारण–धर्म निरपेक्षता का मुखौटे पहनकर स्वयं धर्मनिरपेक्ष होने का दम भरते हुये उल्प संख्यक समुदायों को धर्मांधता व सांप्रदायिकता से रक्षा देने का झूठा आश्वासन देकर उनके वोटों पर हाथ फेरने के लिए जनता दल जी तोड कोशिश कर रही है. इस तरह ये सभी पार्टियां सांप्रदायिक आग को प्रज्वलित रखने के लिये भरसक कोशिश करते हुये–उस आग में घी डाल रही है.

समर्थन करना है. इस तरह करते समय शोषक शासक वर्ग को सुसंगठित करनेवाले ''राष्ट्रीय एकता'' नारे का पर्दाफाश करना है.

7. धार्मिक उन्मादियों के हमलों का प्रतिरोध करने जहां तहां सभी धर्मों और जातियों के लोगों से आत्मरक्षा दलों तथा जन प्रतिरोध संस्थाओं का गठन करना है.

8. जाति और धर्म का फूट जहां होने की आशंका है, वहां शांति कमेटियों का गठन करना हे.

भारत देश में अर्ध सामंतवादी, अर्ध उपनिवेशवादी शोषण को अंत करने वाली नवजनवादी क्रांति ही पीड़ित जनता को एकता सूत्र में बांध सकती है. ''जमीन जोतनेवालों को'' वाली नीति के साथ, और जन सेना के सशस्त्र बल के साथ–शोषक शासक वर्ग के अधिकार को डहा देनेवाले दीर्घकाल प्रजायुद्ध मार्ग द्वारा ही नवजनवादी क्रांति विजयी हो सकती है. इस तरह, किसान मजदूर एकता और सब जातियों के समानता के आधार पर जनवादी भारत रिपब्लिक की स्थापना करना है.

20 / 12 / 1990

भात कम्युनिस्ट पार्टी (माले)

(पीपुल्सवार)

आन्ध्र एवं दण्डकारण्य फारेस्ट कमेटी

2. हमारे हमलों का बुनियादी निशाना हिन्दू धार्मिक शक्तियों पर होना चाहिए. क्योंकि हिन्दू धार्मिक शक्तियों को संख्याबल के साथ–साथ संवैधानिक कुमक भी मिलता है.

3. शोषित व दलित अल्प संख्यकों तथा निम्न जातिवालों को संघर्ष के लिए एकजुट करते समय उनकी श्रेणियों की धार्मिक शक्तियों का भंडाफोड़ करना चाहिए. जाति और धार्मिक नेतृत्व पर लडने के लिए जाति और धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्क जनवादी क्रांतिकारी दृष्टि से जनता को चेतनता देनी होगी.

4. दलित और शोषित अल्प संख्यकों तथा निम्न जातियों को समर्थन देनेवाली अपनी नीति को तेजरहित न बनाते हुये बहुसंख्यक धर्म के श्रमजीवियों को अपने नेतृत्व के अंतरगत लाना है. जनता की एकता के लिए संघर्ष करना ही एकमात्र फासिस्ट हमलों को रोकता है.

5. हिन्दू धार्मिक कटटरता से तथा दिन प्रतिदिन बढ़नेवाला फासिस्ट रवैये से लडते समय हमारा लक्ष्य बुर्जूवा जनवाद को फिर से कायम करना नहीं होना चाहिए. उस पर निर्भर धर्म निरपेक्षता कायम करना भी नहीं होना चाहिए. हमारा लक्ष्य क्रांति को आगे बढ़ाना और नव जनवाद की स्थापना करना होना चाहिए.

साधारण कर्तव्य :

1. सभी धर्म समान है–इसका प्रचार करना है. अल्प संख्यकों के अधिकार और सुरक्षा की गारंटी देनी है.

2. हमें मांग करना है कि राज्यंत्र धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए. याने सरकार को सब धर्मों के समुदायों के अधिकारों का आदर करना है. किसी एक धर्म को बड़ा नहीं मानना है. सरकार को किसी धर्म के अंतरंग मामलों में दखलंदाजी नहीं करनी है.

3. भारत के इतिहास को वैज्ञानिक ढंग से विवेचन करके–हिन्दू, मुस्लिम, सिक्क, ईसाई और जोराष्ट्रियन सबने भारत की सांस्कृतिक संपदा को सुसंपन्न किया है–ऐसा प्रचार करना चाहिए.

4. वैज्ञानिक दृष्टि कोण का प्रचार करके अंध–विश्वासों को मिटाना चाहिए.

5. इतिहास में हिन्दू और मुस्लिमों की एकता के जो हिन्ह है उनका उपयोग करते हुये भारतीय समाज के प्रतिशील परंपराओं का इस तरह प्रचार करना चाहिये कि लोगों के हृदयो में गहरे पैठ जाये.

6. हमें प्रचार करना चाहिए कि भारत देश अनेक जातियों का वासस्थान है. ये सभी जातियां केन्द्र में सत्ताधारी शासक वर्ग द्वारा सताई जा रही है. अलग हो जाने के अधिकार समेत सभी जातियों के आत्म निर्णय अधिकार का

पिछले साल इसी धर्मान्धता के कारण बदायूं, इंदौर, कोटा रतलाम और भागलपुर आदि नगरों में जो दंगे हुये और जो सांप्रदायिक आग की लपटें पैली–उसकी विभीषिका को सब जानते हैं. इससे भी बढकर हाल में गोंडा, अयोध्या, कानपुर और हैदराबाद शहरों में सांप्रदायिक हिंसा की जो लहर दौडी व सिर्फ कलेजे को दहला देनेवाली ही नहीं बल्कि भारत की जनवादी क्रांति के सामने एक सवाल बनकर खडी है.

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने शोषण को बेहतरीन ढंग से जारी रखने तथा उससे लाभ उठाने के लिये ''फूट डालो राज करो'' वाली नीति को अपनाकर हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच अलगाव को प्रोत्साहन दिया था. राष्ट्रीय आंदोलन के जमाने में तिलक जैसे कांग्रेस नेताओं ने भी अपने हिन्दू धर्म पुनरजीवन के प्रयत्नों द्वारा, साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन को नुकसान पहुंचानेवाला हिन्दू–मुस्लिम अलगाव को और प्रोत्साहन दिया था. और करने की बात है कि उसी समय याने 1906 के आसपास मुस्लिम लीग का गठन हुआ था. गांधी के रामराज्य संबंधी स्वप्न तथा उसकी हिन्दू संप्रदाय संबंधी अन्य भावनाओं के कारण ही मुस्लिम लीग बहुत जल्द एक बलवान ताकत के रूप में उभरकर सामने आयी है. इसी पूर्व भुमिका में, भारत दलाल पूंजीपतियों के ठेकेदारी अधिकार का विरोध करते हुये मुस्लिम पूंजीपतियों ने दो जातियों के सिद्धांति को अथवा पाकिस्तानवाद को सामने किया है. मुस्लिम जनता में जो असुरक्षा की भावना थी उससे लाभ उटाकर मुस्लिम दलाल पुजीपतियों ने पाकिस्तान को पा लिया है. 1947 में दोनों धर्मों के शासक वर्गों ने देश में जिस नर संहार का तांडव कराया उससे सारी मानव जाती ने शर्म से सिर झुका लिया है.

1947 तक, छोटे–छोटे कलहों और द्वंद्वों के बावजूद उपखंड के सभी धर्मों के लोग आपस में मिल जुलकर रहते आये है. मिल–जुलकर रहते हुये ही उन्होने मानव सांस्कृतिक संपदा की तरक्की में अपना हाथ बंटाते हुये, अपनी हिस्सेदारी अदा की है. पर, अब हालत बदल गई है. उपखंड की जनता में पून्ट की ज्वालाये भभक रही है. लोग भिन्न धर्मावलंबियों को शंका की नजर से देख रहे हैं. 1947 में, धार्मिक उन्माद तथा सांप्रदायिक पून्ट से प्रेरित हो उपखंड में जिस नरसंहार का तांडव हुआ है और जो घटनाएं उस समय घटी है – उसी को पूर्व भूमिका बनाकर हिन्दू कटटरवादी धर्मांधों ने हिन्दू पुनरजीवनवाद के प्रचार की कोशिशें तेज की हैं. आज हिन्दू सांप्रदायवादी व कटटरवादी जिस पुनरजीवनवाद को सामने ला रहे हैं, उस पर जरा विस्तार से विचार करेंगे.

हिन्दू राष्ट्रवाद

हिन्दू धर्म के आधार पर भारत की राष्ट्रीयता की फिर से व्याख्या करना व विवेचन करना ही हिन्दू राष्ट्रवाद का खास मक्सद है. इस तरह भारत समाज को हिन्दू समाज तथा भारत देश को हिन्दुस्तान बताकर भारत और हिन्दू को एक ही बताने का कुत्सित प्रयत्न हो रहा है. धर्मांधता तथा हिन्दू पुनरजीवन का प्रधान पक्षधर भाजपा और शिवसेना का प्रमुख नारा था ''मेरा देश महान उसका नाम हिन्दुस्तान''.

इस तरह ये हिन्दू कटटरवादी कहते हैं कि देशभक्त होने की पहली शर्त हिन्दू होना है. अथवा, हिन्दू ही देशभक्त होता है. ये प्रतिक्रियावादी व हिन्दू पुनरजीवनवादी कहते हैं कि देश की एकता का अर्थ हिन्दू एकता ही है. इनके अनुसार हिन्दू राष्ट्रवाद में विविधता की गुंजाइश नहीं होती है. इस तरह गैर हिन्दू धर्मावलंबी मुस्लिम, सिक्क, बौद्ध और इसाई अपने धार्मिक विश्वासों के कारण राष्ट्रविरोधी व राष्ट्रद्रोही माने जाते हैं. ये हिन्दू पुनरजीवनवादी मानते है कि–अपने धार्मिक विश्वासों को लोकतंत्र के आधार पर हिफाजत के साथ रखने के इच्छुक अल्पसंख्यक जातियों के लोग व अल्पसंख्यक धर्मों के लोग, भारत के प्रभुसत्ता के लिये हानिकारक हैं. जातिगत मानसिक भावनाएं, जातिगत चेतना एवं जातिगत परिपूर्णता–इन तीनों को एक दूसरे के विरूद्ध पड़ने वाले तत्व मानते है उपरोक्त हिन्दू धर्माध. वे और भी कहते हैं कि–इसलिए भाषा और संस्कृति संबंधी सभी विरोधताओं को दबा डालकर सारे हिन्दुओं को एक हो जाना चाहिए. इस तरह हिन्दू राष्ट्रवाद उग्रता की सभी सीमाओं को पारकर अब उन्माद के दायरे में प्रवेश कर गया है. ये जर्मनी और जापान जैसे राष्ट्रवाद पर इस तरह रीझ गये है कि कहने लगे–भारत देश को विकास के पथपर ले जाना हो तो जर्मनी और जापान जैसा राष्ट्रवाद ही एकमात्र मार्ग है. इतना ही नहीं, ये महाशय इज्राइल को अपना आदर्श मानते हैं. इनकी बातों के अनुसार आज का भारत बिना सिर पैर के धड़ के समान है. पाकिस्तान, बंगला देश और श्रीलंका से युक्त ''अखंड भारत'' अथवा ''आर्यावर्त'' का निर्माण करना इनका लक्ष्य है. कहते हैं–''उपरोक्त देश बहुत पहले से भारत के अंतरंग भाग है. इसलिये अब उन देशों को विजय करके फिर से भारत में मिला लेना है. इस तरह करके ही हम इतिहास में जो भूल व गलती हुई, उसे सुधार सकते हैं.'' इस तरह प्रतिक्रांतिकारी हिन्दू राष्ट्रवाद व जातिवाद देश के अल्पसंख्यक जातियों को ही दबा डालना नहीं चाहता है, बल्क अडोस–पडोस देशों पर आक्रमण करने को भी प्रोत्साहन देता है और अपनी विस्तारवादी नीति का परिचय भी देता है. कहते है।–''उपरोक्त देश बहुत पहले से भारत के अंतरंग भाग हैं. इसलिये अब उन देशों को विजय करके फिर से भारत में मिला लेना है. इस तरह करके ही हम ''दिमागी कसरत'' की तरह–सामने लाने की गलती हमें नहीं करनी है. बूर्जुवा वर्ग के राडिकल डेमोक्राटस अक्सर ऐसी गलती करते हैं. मजदूरों का बेहद शोषण करते हुये उन्हे तेजहीन करने का काम जिस समाज में चलता है, उस समाज में सिर्फ प्रचार के तरीको द्वारा ही धार्मिक फूट व द्वेष को मिटा देने की आशा रखना, मात्र बेवकूफ है. मनुष्यों पर धर्म का जो प्रभाव देखने में आता है, वह समाज में स्थित वित्तीय शोषण का नतीजा और उसका प्रतिबिंब है. इस बात को भूल जाना–बूर्जुवा संकीर्णतावाद कहलाता है. पूंजीवादी काली शक्तियों पर मजदूर वर्ग जो खुद का संघर्ष चलाता है उस संघर्ष को अगर चेतनशील नहीं बनाते तो फिर कितने ही पर्चे बांटो, कितने ही भाषण दो मजदूर वर्ग को चेतनशील नहीं बना सकते. चेतनशील संघर्ष द्वारा ही मजदूर वर्ग की अपेक्षा इस लोक को स्वर्ग बनाने के लिए शाषित वर्ग द्वारा चलाया जानेवाले संघर्ष में एकता लाना प्रधानता रखती है.''

उपरोक्त विवरण के साथ–साथ यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि धार्मिक उन्मादकारी शक्तियां प्रत्यक्ष रूप से क्रांति संघर्ष को गुमराह करती है इस तरह क्रांति द्रोह करती है, संशोधनवादी शक्तियां, अपने आचरण द्वारा विशाल जन समुदाय को जाती–धर्म के नाम से बांटकर सामाजिक क्रांति को गुमराह करते हुये परोक्ष रूप से क्रांति का अपचार कर रही है. ये दोनों शक्तियां प्रकट में कुछ भी कहे, पर शोषण पर आधारित इनका व्यवहार विष से भरा दूध के धडे के समान की होता है. ये लोग भिन्न स्तरों में क्रांति का द्रोह करते है और उसकी उन्नति को रोकने के लिये शक्तिभर कोशिश कर रहे है.

क्रांतिकारियों का कर्तव्य

धर्म निजी विषय होने पर भी अल्प संख्यक धर्मावलंबियों पर होने वाले हिन्दू कटटरपंथियों के हमलों को लापरवाही की नजर से नहीं देखना चाहिए. ऐसी लापरवाही फासीवादी अभिव्यक्ति का दुष्ट रवैया है. निरंकुश तानाशाही की खास रवैया यह है कि वह बुर्जुवा संविधान के बुनियादी अधिकारों कोा भी पांव तले कुचल डालता है. क्रांतिकार इस धार्मिक उन्माद का प्रतिरोध करता है. और इसके खिलाफ लोगों को एकजुट करता है.

उपरोक्त कर्तव्य निर्वाह के लिये लक्षण कार्यक्रम

1. इन फासिस्ट हमलों का प्रतिरोध करते समय हमें दलित और शोषित अल्प संख्यकों के पक्ष में तथा निम्न जातिवालों के पक्ष में दृढ़ता के साथ रहना चाहिए. इस कर्तव्य पूर्ति में उनको अपना नेतृत्व देना है. जाति और धर्म की समस्यायें जब उठती है तो हमें अल्प संख्यकों तथा निम्न जातियों के तरफदार रहना है.

उन्ही की सहायता से, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नेता सबके सब भूमिगत हो गये थे और वे तीस अक्तूबर को अयोध्या में प्रकट होकर दमन चक्र चलाया इससे आम जनता पर तो मुसीबत के पहाड़ टूट पडे है पर, कटटरवादियों के कार्यों में कोई फर्क नहीं लाया है. उनके कार्य बेरोक टोक चलते ही रहे है. उस दिन याने तीस अक्तूबर को अयोध्या में हजारों कार सेवक आ धमके थे. पुलिस की सहायता से ही कार सेवक बाबरी मसजिद में घुस गये और उन्होने उसके गुंबज पर केसरिया झंडा फहराया है. उस दिन पुलिस द्वारा जो गोलियां चलाई गई है, उसके कारण तब तक तटस्थ रहनेवाले अयोध्या के नागरिक भी मजबूरन हिन्दू कटटरवादियों के तरफदार हो गये है. अंत में सरकार ने कार सेवकों को ''राम लला'' के दर्शन का अवसर दिया है. इस तरह हिन्दू धार्मिक कटटरवादियों की मनोकामना पूरी की गई है कटटरवादी धार्मिक संस्थाये विविध प्रकार के कार्यक्रमों को पूरा कर रही है. कार सेवा को एक महा यज्ञ के रूप में वर्णन करते हुए सांप्रदायिक दंगों की आग को प्रज्वलित दखने के लिए एक–एक लकडी को उस आग में झोंक रहे हैं. सात तारीख को वी.पी.सिंह की सरकार गिर गई. सांप्रदायवादी खुश हुये. नई सरकार को मोहलत देने के बहाने स्वयं सांस लेने ताल्कालिक रूप से कार सेवा को स्थगित किया है. एक ओर चन्द्रशेखर सरकार से चर्चाएं चल रही है, दूसरी ओर फिर से कार सेवा को शुरू करने का उन्होने ऐलान कर दिया है. उसे शांति के साथ किया जानेवाला सत्याग्रह बताया है.

अयोध्या में तो स्थिति शांतिपूर्ण है. पर, देश के अन्य भागों में जहां तहां कुछ वारदातें हुई है. कई मसजिदों और ईदगाहों को हिन्दू कटटरवादियों ने गिराये है. आन्ध्र प्रदेश के रंगा रेडडी जिले में करीब दो सौ मसजिद व ईदगाह गिराये गये है. अलीगढ़, कानपुर और हैदराबाद शहरों में बड़ी हलचल व गड़बड़ी मची है. सैकडों बेक्सूर, धार्मिक उन्मादियों की छुरियों के शिकार हुये है. लगातार कफर्यू लगाकर और सेना को बुलाकर भी सरकार शांति को बहाल नहीं कर सकी है.

ऊपर बताये हाल ही के सांप्रदायिक दंगे और धार्मिक अशांति इस बात के सबूत है कि चन्द्रशेखर सरकार की मौजूदगी में होनेवाली ये चर्चाये शांति को बहाल नहीं कर सकेंगी. चर्चाओं के बहाने मिलनेवाले इस अवसर का उपयोग करके धार्मिक कटटरपंथी और ताकतवार बनेंगे. समस्या का शांतिपूर्ण समाधान कटटरपंथियों की मंशा नहीं है. उनका लक्ष्य है–क्रांति संघर्ष को गुमराह करना, सत्ते को हथिया लेना और धार्मिक राज्य की स्थापना करना. इसलिये, चर्चाये बेकार है, इनके द्वारा राम जन्म भूमि समस्या का समाधान नहीं होगा.

इतना ही नहीं, कॉमरेड लेनिन के अनुसार–''धार्मिक समस्या को निराकार और भावात्मक ढंग से–याने वर्ग संघर्ष से संबंध न रखने वाला इतिहास में जो भूल व गलती हुई, उसे सुधार सकते है।.'' इस तरह प्रतिक्रांतिकारी हिन्द राष्ट्रवाद व जातिवाद देश के अल्पसंख्यक जातियों को ही दबा डालना नहीं चाहता है, बल्क अडोस–पडोस देशों पर आक्रमण करने को भी प्रोत्साहन देता है और अपनी विस्तारवादी नीति का परिचय भी देता है. अब ध्यान देने योग्य बात यह है कि हिन्द राष्ट्रवाद में साम्राज्यवाद विरोधी भावना रत्तीभर भी नहीं है. ये दुष्ट हिन्द कटटरवादी दुनिया की साम्राज्यवादी महाक्तियों के आधिपत्य को, अथवा उक्त महाशक्तियां हमारे देश में जिस शोषण व लूट को मचा रही है., उसको–कभी भी–भलकर भी भर्त्सना नहीं करते है।. इन हिन्दू धर्मांधों की भाजपा आदि पार्टियां साम्राज्यवादियों के शुभागमन के लिये देश के द्वार बिलकुल खुला छोड़ देने के पक्ष में रहती है.

हिन्दू दुराग्रह :

हिन्दू पुनरजीवनवाद का दूसरा पहलू यह है कि–'' अन्य धर्मो से हिन्दू धर्म सर्वोत्कृष्ट व सर्वोपरि है.'' ऐसी झूठी व घमंड से भरी समझ का, लोगों में प्रचार करना और ऐसी दुष्ट समझ के अनुरूप आचरण करना और कराना हिन्दू पुनरजीवनवाद का दूसरा पहलू है. यह और भी कहता है–''सहिष्णुता हिन्दू धर्म का बहुत बडा गुण है, जबकि मुस्लिम और ईसाई धर्मों मे इस गुण का बिलकुल अभाव है. मुस्लिम, और ईसाई धर्म हिंसा, आतंक और लूट पर आधारित हैं. पाकिस्तान और बंगला देश में जो फौजी हुकुमतें कायम हुई है, वह संयोगवश नहीं है. इस्लाम धर्म में सहज ही हिंसा का जो रूझान है, उसी के कारण फौजी हुकुमतें कायम हुई है. हिन्दू धर्म ऐसा नहीं है. हिन्द धर्म के विरासत के रूप में मिले इन अच्छे और उन्नतिशील गुणों को मुस्लिम और ईसाई धर्मों के रूप में जो मलिनता लग गई है, उसे धो डालना है. इसके लिये अत्यंत आवश्यक कार्यक्रम यह है कि दुष्ट मुस्लिम आक्रमणकारियों ने जिन हिन्दू मंदिरों को ध्वंस किया है, उनका पुनर्निर्माण करना है. इस कार्यक्रम के अंतरगत अयोध्या में राम जन्म भूमि मंदिर राम के लिये और कृष्ण जन्म भूमि मथुरा में कृष्ण के लिए भव्य मंदिरों का निर्माण करना है. इनके अलावा हजारों ऐसे हिन्द पवित्रस्थान हैं जो दुष्ट मुस्लिम आक्रमणकारियों के कारण अपवित्र व मलिन हुए हैं, उन स्थानों को भी मुक्त करना है. ऐसे हिन्दू पवित्र स्थान तीन हजार है, जिन्हे तुरन्त मुक्त करना है. इतना ही नहीं, ताजमहल भी एक हिन्दू मंदिर को गिराकर बनाया गया है. इतिहास की इस गलती को भी अब ठीक करना है. अहमादाबाद, हैदराबाद और मुर्दाबाद आदि नगरों के उक्त नामों को बदलकर हिन्दू संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप नाम रखना है. इसी उदेदश्य से हैदराबाद के हुसेन सागर का नाम विनायक सागर रख दिया गया है. हमारे जीवन पर इस्लाम का जो प्रभाव पडा है उसे पूरी तरह धो डालकर उसके स्थान पर हिन्दू आर्ष प्रभाव को

बैठाना है. और हिन्दू आर्ष सांप्रदाय के विधि नियमों का अक्षरशः पालन करना और कराना है.''

ये हिन्दू धर्मांध और हिन्दू दुराग्रही, हिन्दुओं में भी असुरक्षा भाव पैदा करते है और अल्प संख्यक जातियों के प्रति द्वेष और फूट की भावना फैलाते हैं. इनकी दलील इस प्रकार है–''शक, हूण, पहल व जैसी विदेशी जातियां हिन्दू मुख्य जीवन धारा में मिल नहीं सके हैं. ये मुसलमान, भारत के मुख्य जीवन धारा में घुलमिल गई है. पर, मुसलमान भारत के मुख्य जीवन धारा में मिल नहीं सके है. ये मुसलमान, भारत के प्रति और भारतीयता के प्रति कभी विनम्र नहीं रहे है. ये अपने हृदयों में मात्र पाकिस्तान के प्रति और इस्लाम के प्रति श्रदालुता रखते हैं. इसलिये इनको भारतीय बनाना है, याने हिन्दू बनाना है.''

ये हिन्दू कटटरवादी–पुराने इतिहास के आधार पर आज के मुसलमानों को मुगल और इस्लाम के पुराने आक्रमणकारी बताना चाहते हैं. हिन्दू सांप्रदायवादी यह दलील भी पेश कर रहे हैं कि–''मुसलमान परिवार–नियोजन ऑपरेशन नहीं कराते और बहु पत्नी प्रथा को अमल में रखते है। इतना ही नहीं, हिन्दू अल्पसंख्यक जातियों के लोगों को धर्म परिवर्तन कराकर मुसलमान बना रहे हैं. इस तरह ये अपनी संख्या बल बढ़ा रहे हैं. जल्द ही इनकी संख्या हिन्दुओं की संख्या से बढ़ जायेगी. देश पर शासन करने वाली सरकारें मुसलमानों के प्रति नरमी बरत रही है. इनको पुचकार रही है. इसलिये मुसलमान घमंडी व गुस्ताख हुये जा रहे है. यही कारण था कि हिन्दू हरक्षेत्र में पिछड़ते जा रहे हैं. इस तरह हिन्दू, मुसलमानों के मुकाबले दूसरे दर्जे के नागरिक बनते जा रहे है. इसलिये अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा आयोग को मानव अधिकार रक्षा आयोग के रूप में बदलना चाहिए और कश्मीर मुसलमान बहुसंख्यक होने के नाते उसको संविधान के 370 अधिनियम द्वरा मिलने वाले अतिरिक्त अधिकारों को रदद कर देना चाहिए.''

हिन्दू दुराग्रही सिर्फ इस तरह के दलील देकर ही चुप नहीं रहे हैं. ये अपनी कामनाओं एवं मनोभावनाओं को अल्पसंख्यक जातियों के सिर लादने के लिए तथा समाज में एकरूपता युनिफर्मिटी लाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहे हैं. इस के लिए टीवी रेडियों जैसे नवीन प्रचार यंत्रों को भी प्रयोग कर रहे है।. इस देश के शोषक–शासक वर्ग के शोषण को बेरोकटोक जारी रखने के लिए जिस एकरूपता की जरूरत थी, उसे लाने के लिए बडे पैमाने पर प्रयत्न हो रहे हैं. इसी प्रयत्न का फल है, टीवी, रामायण और महाभारत. टीवी में धारावाहिक रूप से प्रसारित रामायण और महाभारत ने लोगों की धार्मिक भावनाओं का बेहद उकसाया है. इन प्रसारणों द्वारा हिन्दू दुराग्रहियों को असीम प्रोत्साहन मिला है.

चाल चली है. अधिकार रोजी रोटी के लिये झगडने वाले कुत्तों की इस लडाई को–धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक कटटरता के बीच होनेवाले संघर्ष के रूप में वर्णन कर के वी.पी.सिंह ने बहुत बडे धर्मनिरपेक्षतावादी होने का पोज दिया है.

अब तक हर बुधवार के दिन भोज पर आमंत्रित कर के दावत दे कर, हर विषय पर बहस पर बहस मशविरा कर के सलाह ले कर और अस तरह अपने शासन कार्य के भागीदार जिस ''सहयोगी पक्ष'' को बनाता अया था उसी ''सहयोगी पक्षा'' को अब एक दम धार्मिक कटअरता भरी पार्टी के रूप में वर्णन कर रहा है, वी.पी.सिंह धार्मिक कटटरता का बिना दमन किये, लोगों को उक्साने का उन्हे पूरा अवसर दे कर अब, अक्टुबर 30 तारीख को होने वाले ''कार सेवा'' को रोकने का प्रयत्न कर रहा है :, वी.पी.सी सिंह.

सितंबर 25 तारीख को रथ यात्रा आरंभ हुई है. इस यात्रा के संदर्भ में अडवानी ने कहा ''राम राष्ट्रीय महा पुरूष है. इसलिये, मुस्लिमों का राम मंदिर निर्माण में बाधा डालना ठीक नहीं है. धार्मिक विश्वासों और ऐतिहासिक सबूतों के बीच ताल मेल नहीं बैठता है. ''राम जन्म भूमि'' का सवाल करोड़ों हिन्दुओं की आकांक्षा है. इस लिये अदालत के फैसले को मानने की जरूरत हमें नहीं है.'' इस तरह लोगों को अपने इच्छानुसार भडकाने का अवसर भाजपा को पहले ही दे दिया है. इस भडकाने का प्रभाव देश के चारों कोनों में पडा है. करनाटक, आंध्र प्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल आदि राज्यों में दंगे हुये हैं. भारी मात्रा में हिंसा का प्रयोग भी हुआ है.

यह सब होते समय वी.पी.सिंह धर्मिक नेताओं से बहस व चर्चाओं का बहाना करते हुये समय गुजारता रहा है. – आखिर, मुसलमानों में असुरक्षा का भाव जोर पकता गया. तब जाकर 23 अक्टूबर के दिन बिहार के समस्तीपुर जिले में अडवानी को गिरफ्तार कराया है. यह गिरफ्तारी भी एक नाटक है. गिरफ्तार हुआ आडवानी, टेलीफोन में अपनी पत्नी और बच्चों से, पार्टी के नेताओं से और आखिर अखबार वालों तक से बात करता रहा है. क्या ऐसी सुबिधा की आशा दलित, पीडित जनता के नेता स्वप्न में भी, कर सकते हैं?

राज्य और केन्द्र सरकारों ने –''अक्टुबर 30 को होने वाली कार सेवा को रोक देंगे.'' इत्यादि बडी–बडी बातें की है. इस के लिये उत्तर प्रदेश से जानेवाली रेलों को रोक दिया है. बारीकेडों का निर्माण किया गया है. बेहिसाब पुलिस वालों को अयोध्या में तैनात किया. इस तरह बहुत हंगामा मचाया. धार्मिक कटटरवादी नेताओं को, धार्मिक उन्माद को भड़काने का पूरा अवसर दे–फिर आम जनता पर दमन और प्रतिबंध को अमल कर दें, क्या इस तरह धार्मिक कटटरता का नाश होता है? नहीं होता. ऐसी स्थिति में धार्मिक कटटरता अपने हजारों पत फैलाकर परिष्कारने गलती है. सरकारी प्रतिबंध के बारे में, शासकीय विभाग में रहनेवाले धार्मिक उन्माद हमदर्दों द्वारा पहले ही जानकारी प्राप्त करके,

खिलाफ आंदोलन चलाया है. इसी बीच भाजपा ने, वी.पी.सिंह सरकार को चार महीने की मियाद दी कि इन चार महीनों के अंदर–अंदर राम जन्म भूमि और बाबरी मसजिद समस्या का समाधान किया जाय. भाजपा को मालूम हुआ कि वीपीसिंह ने मंडल सिफारिशों अमल का ऐलान करके अपने (भाजपाके) पांवों को काट दिया है. इसीलिये भाजपा ने मद्रास की अपनी कार्यकारिणी की बैठक में कार्यकर्ताओं को आहवान दिया कि अब चुनाव लडने के लिए तैयार हो जाओ. इसी बैठक में सोमनाथ से अयोध्या तक रथ यात्रा का निर्णय लिया है. भाजपा ने 89 के चुनाव में 86 सीटें जीत ली हैं. अब उस जीत को सुरक्षित करना तथा निकट रहा अधिकार को हाथ में लेना था. इसके लिये योजनायें तैयार की. इन्ही योजनाओं के बल के सहारे भाजपा ने कहा–''राम जन्म भूमि मंदिर निर्माण को अब कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती. अगर सरकार रथ यात्रा को रोक देती तो तत्काल रामो सरकार से हम अपना समर्थन वापस ले लेते.''

धर्म निरपेक्षता का राग आलापनेवाला वी.पी.सिंह, भाजपा के दबाव में आकर उसके सामने सर झुकाते हुये, एक नंबर हत्यारा जग मोहन को कश्मीर का गवर्नर नियुक्त किया है. इस हत्यारे ने कश्मीर घाटी मे अमानवीय दमन और प्रतिबंध को अमल करके सैकडों निरपराधियों की हत्या कराई है. इतना ही नहीं कश्मीर समस्या को धार्मिक समस्या बताने की कोशिश भी इसने की है. जम्मू प्रांत में रहनेवाले कश्मीरी पंडितों को डरा धमका कर व फुसलाकर पुनर्निर्माण शिविरों में जाने के लिये मजबूर करके, मेल–मिलाप और शांति के साथ जीनवाले कश्मीरियों के बीच इसने आग के शोले भडकाये हैं. इस जग मोहन के षड़यंत्र को जरा देर से ही सही समझ गये कश्मीरी पंडित अब अपने कश्मीरी भाईयों से माफी मांग रहे है.

भाजपा द्वारा रथ यात्रा ऐलान के बाद वी.पी.सिंह ने समझ लिया कि अब उसकी सरकार के दिन पूरे हो गये हैं. फिर उसने देश की आबादी में 12 प्रतिशत रहनेवाले मस्लिमों की तरफ रुख किया. उनके वोटों पर हाथ फेरने के प्रयत्न में लग गया है. बाबरी मसजिद बगलवाले विवादास्पद स्थल को सरकार अपने अधीन में लेने के लिये राष्ट्रपति से अध्यादेश जारी कराया. इस काम के लिजये पी.पी.सिंह सरकार की तारीफ का मुल बांधते हुये अडवानी ने कहा–''देर से आरंभ किया उचित कार्य.''

हिन्दू धार्मिकता को उन्माद की अवस्था को पहुंचा कर फासिस्ट ताना शाही तथा धार्मिक राज्य की स्थापना को चाहने वाले विश्व हिंदू परिषद वाले सरकार के इस कार्य से बिलकुल संतुष्ट नहीं हुये है. उन्हे बडी निराशा भी हुई है. सो विश्व हिन्दू परिषद ने सरकार के इस कार्य के प्रति अपना निराकरण प्रकट किया है. मुस्लिम कटटरवादियों ने भी इसका तिरस्कार किया है. अपनी आखरी कोशिश भी इस तरह नाकाम रहने के बाद वी.पी.सिंह ने अब एक नई

हिन्दू एकतावाद :

हिन्दू पुनरजीवनवाद कहता है कि सब हिन्दू जाती, वर्ण, और वर्ग आदि को भूलकर एक हो जाना चाहिए. इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हिन्दू पुनरजीवनवादी अपने जाति और वर्ग को भुला देने को भी तैयार हो रहे हैं. अनुसूचित जाति एवं जनताति वालों को हिन्दू धर्म में सेक्य करने के लिए प्रयत्न बातें कर रहे हैं. हिन्दू संगठन भी अंबेडकर की जयंती मना रही हैं. ज्योतिबा फूले जैसे ब्राह्मण विरोधी आंदोलन के नेताओं की–हिन्दुओं में एकता लाने वालों के रूप में–तारीफ कर रहे हैं. ज्योतिबा फूले ने जिस बहुजन समाज भावना को लोगों में फैलाने के लिए अपने प्रबोधों के द्वारा लोगों में प्रचार कार्य किया है, उन प्रबोधों में हिन्दू एकता की अपनी टिप्पणियां जोडकर हिन्दू पुनरजीवनवादी उन्हे एक हथियार की तरह अपने लिये इस्तेमाल कर रहे हैं. ज्योतिबा फूले ने ब्राहमणों के आधिपत्य पर और हिन्दू धर्म पर जो हमले किये थे, उन्हे ये हिन्दू एकतावादी जानबूझ कर भुला दे रहे है. इतना ही नहीं, अनुसूचित जाति के प्रत्याशियों को अपनी पार्टी की टिकट दे रहे हैं और बंगारू लक्ष्मण जैसे अनुसूचित जाति वालों को अपनी पार्टी में नेतृत्व स्थानों पर बिठा रहे है. लेकिन, देश की अर्थ व्यवस्था में जो अर्ध सामंती नीति चल रही है, उस अर्धसामंती नीति का ध्वस्त किये बिना भिन्न जातियों के लोगों को एक करने का प्रयत्न करना बेकार और पाखंड भरा काम है. उससे जातियों के बीच जो दीवारें खडी है, वे गिरती नहीं, बल्क और भजबूत बनती है. जाति विभाजन पर आधारित हिन्दू धर्म को पुनरजीवन देने का कोई भी प्रयत्न सफल नहीं रहेगा, चाहे हिन्दू पुनरजीवनवादी कितना ही गला फाड–फाडकर कहें कि हिन्दू समाजगत जाति विभाजन को मिटाने के लिए ही हिन्दू पुनरजीवन की जरूरत है, फिर भी इन प्रयत्नों से हिन्दू समाजगत जाति विभाजन की मूल प्रवृत्ति मिटेगी नहीं, यह बात हिन्दू पुनरजीवनवादियों को भी खूब अच्छी तरह मालूम है. ये धर्मांध जिन सांप्रदायिक दंगों व कलहों को प्रोत्साहन दे रहे हैं उन दंगों के लिए पिछड़ी और अनूसूचित जाति के लोगों को बारूद्ध के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं.

पिछड़ी जातिवालों को हिन्दू धर्म में शामिल करने के लिए ये कटटरवादी बड़ी कोशिश कर रहे हैं. इसी के अंतरगत पूर्वोत्तर भारत की जातियों को अपने धर्म में मिलाने के लिए विश्व हिन्दू परिषद के प्रयत्न जारी है. उन जातियों को ईसाइयत के प्रभाव से मुक्त कराने, साथ ही उन जातियों के न्यायपूर्ण संघर्षों को गलत राह पर मोड़ने के षड़यंत्र भी रचे जा रहे हैं.

दूसरी तरफ सिक्क, जैन और बौद्ध जैसे धर्मों को हिन्दू धर्म की शाखाओं के रूप में दिखाने का प्रयत्न भी हो रहा है. इस तरह करने से इसाई

और इस्लाम जैसे विदेशीय धर्मों पर आसानी से हमला कर सकने के मनसूबे बांध रहे है।.

सामरिक (मिलिटेन्ट) हिन्दू धर्म :

आर्थिक व राजनीतिक संकट का, जिस समाज में बोलबाला हो और जिस समाज में लोग अपनी साधारण सी मांग को भी बिना संघर्ष किये पूरा नहीं कर सकते, उस समाज की जनता में समरशीलता का स्तर बहुत ऊंचा होता है. इस तरह हमारे सामाजिक जीवन में समरशीलता को खास स्थान मिल गया है तो हिन्दू पुनरजीवनवाद को भी समरशीलता का अंश मिल जाना सहज ही था. फिर हिन्दू कटटरवादी इस समरशीलता का बेहद दुरपयोग कर रहे हैं. दूसरे धर्मावलंबियों पर–खासकर मुस्लिमों पर–सांप्रदायिक हमले करने में इस समरशीलता का उपयोग कर रहे हैं. मुसलमानों पर ऐसे खूंखार हमले कर रहे हैं कि इसके पहले कभी ऐसे नहीं हुये थे. दूसरे धर्मों पर ही नहीं, बल्क हिन्दू धर्म के मुख्य धारा में न रहकर किनारे खडे पिछड़ी जातियों, वर्गों और आदिवासियों में भय का संचार करके उन्हे हिन्दू धर्म में ही बंधे रखने के लिए भी यह समरशीलता काम आ रही है. इस तरह हिंसा का प्रयोग करके उन जातियों की जनता पर मानसिक रूप से असर डाल रहे है. इसके उदाहरण के लिए महाराष्ट्र को ले सकते हैं. महाराष्ट्र में ये हिन्दू फासिस्ट शक्तियां, संघटित हुये नव बौद्धों पर आक्रमण कर रही है और अन्य आदिवासी जैसे मांग, चमार, और मातुंग जातिवालों को भयभीत करके उन्हे हिन्दू धर्म में शामिल करने के प्रयत्न भी जोरों पर कर रही है. धार्मिक नारे, धार्मिक चिन्ह और रामराज्य आगमन के स्वप्न–दिखाकर बेकार युवकों और विद्यार्थियों को अपनी ओर खींच रहे है हिन्दू कटटरवादी.

देश के चारों ओर फैली आर एस एस की शाखाये इस दिशा में बड़ी मुस्तौदी से काम कर रही है. युवकों व विद्यार्थियों में खेलों के प्रति जो सहज आकर्षण होता है, उससे अनुसूचित लाभ उठाते हुये उन्हे शाखाओं में इकटठे कर रहे हैं. राम जन्म भूमि, राम शिला पूजन और राम ज्योति रथ यात्राओं में उन्हे बड़ी संख्या में भागीदार बना रहे हैं.

देश में स्थित राजनैतिक व वित्तीय संकट : ऊपर बताये फासीवादी रवैये।

ऊपर बताये फासिस्ट प्रवृत्तियां हाल ही के पैदा हुये नहीं है. हिन्दू राष्ट्रवाद संबंधी भावनाये और हिन्दू दुराग्रह संबंधी भावनाये कई दशकों पहले से धर्मांधों में मौजूद थीं. पर, अब ये भावनायें बलवती बन गई हैं. इस तरह इन भावनाओं के बलवती होने के कारण यह नहीं कि आजकल हिन्दू पुनरजीवनवाद का प्रचार

इस तरह इस देश की बूर्जुवा शासक वर्ग पार्टियां और संशोधनवादी पार्टियां धर्मांधता व सांप्रदायिक कटटरता के सामने सर झुकाकर, उससे गठजोड़ करके धार्मिक उन्माद को भडकाने में खास भुमिका निभाती रही है. कांग्रेस हार गई और उसके स्थान पर सत्ते में आई राष्ट्रीय मोर्चा. पर, इसका कुछ उम्मीद नहीं कि यह सरकार ईमानदारी के साथ रामजन्म भूमि बाबरी मसजिद समस्या का समाधान ढूंढेगी. स्वयं को सत्ते पे बनाये रखने के लिये धर्मांधता और धार्मिक कटटरता पर आधारित रहते वाले इन पार्टियों से क्या आशा कर सकते हैं?

1989 चुनाव में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला तो राजनीति में अस्थिरता बढ़ गई है. इस स्थिति को अपने लिये अनुकूल बनाने भाजपा ने बड़े जोर शोर से कोशिश की है.

चुनाव अनंतर स्थिति

1989 चुनाव के बाद जो हालत उभर कर सामने आई है उसका विवेचन करेंके.

चुनाव में कांग्रेस पार्टी हार गई. पर, अन्य किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला है. कांग्रेस के खिलाफ चुनाव लडने वाले राष्ट्रीय मोर्चा ने भाजपा और कम्युनिस्टों की मदद से सरकार बनाई है. राष्ट्रीय मोर्चा के प्राण समान जनतादल के आविर्भाव के समय से ही उसके गुटों के आपसी टकराओं से एक अव्यवस्था सी छाई हुई है. मोर्चे के भागीदार गुट एक दूसरे को नाश करने व झुका देने के लिये बडी कोशिश करते आये है. देविलाल को अपनी तरफ करके वी.पी.सिह सत्ते पे आया तो उसे नीचे गिरा कर खुद सत्ते पे आने के लिये चन्द्रशेखर लालाइत रहता था. इधर ग्रामीण इलाकों के प्रतिनिधित्व के बहाने स्वयं अधिकार में आने के लिये देवीलाल सोचता था. उत्तर प्रदेश में मुलायम को धक्का मार कर नीचे गिरा कर, अजीत सिंह खुद मुख्यमंत्री बनना चाहता था. इस तरह जनता दल के हर कोई अलग अलग गुट बना कर कुत्तों की तरह लडते और एक दूसरे को काटते रहे हैं. इसी गुटबाजी व कुत्तों की तरह लडते और एक दूसरे को काटते रहे हैं. इसी गुटबाजी व कुत्तों वाले झगडें के संदर्भ में मेहम उप चुनाव आया है. उस में स्वयं जीतने के लिये ओप्रकाश चौताला ने हत्यायें कराई – ऐसे अभियोग से चौताला को मुख्यमंत्री पद से हटाया गया तो देवीलाल नाराज हुआ और उसने किसान रैली का आदेश दिया. इस किसान रैली के प्रभाव को तथी उत्तर भारत में बढ़ता भाजपा के प्रभाव को रोकने के लक्ष्य को ले कर, वी.पी.सिंह ने मंडल कमीशन सिफारिशों को – सीमित दायरे में ही सही– अमल में लाने का ऐलान कर दिया है. इस ऐलान का खुले तौर पर किसी भी पार्टी ने विरोध नहीं किया. लेकिन, ईमानदारी के साथ मंडल आयोग सिफारिशों को अमल करने के लिए अच्छुक कोई पार्टी भी नहीं है. भाजपा जैसी हिन्दू सांप्रदायिक पार्टी ने अपने विद्यार्थी परिषद को सामने करके आरक्षण के

अ–विवादास्पद करार दे. पर अदालत ने अपना फैसला सुनाया कि वह स्थल विवादास्पद ही है. अदालत से इस फैसले के निकलने से उत्तर प्रदेश सरकार बुरी तरह मुसीबत में फंस गई और उसने एडवोकेट जेनरल से एक वक्तव्य प्रकाशित कराया कि उक्त स्थल में कुछ भाग विवादास्पद है और कुछ भाग अविवादास्पद. अविवादास्पद भाग में ही केसरिया झंडे की प्रतिष्टा हुई है. एडवोकेट जेनरल से इस तरह कहला कर उत्तर प्रदेश सरकार ने हिन्दू कटटरवादियों को संतुष्ट किया है. चुनाव संदर्भ में राजीव गांधाी ने कहा – ''हिन्दू होने के नाते मै गर्व का अनुभव करता हूं.'' इसी तरह और एक सभा में भी उसने कहा कि उसकी सरकार रामराज्य की स्थापना करेगी. अब इस बात का निर्णय राजीव गांधी हीकर सकता है कि उसके उपरोक्त उदगार हिन्दू कटटरता व धर्मांधता को बल पहुंचायेगा? या व जो धर्मनिरपेक्षवाद की बात कर रहा है, उसे बल पहुंचायेगा?

कांग्रेस कहती है कि भाजपा धर्मांधता से भरी पार्टी है. उसे हराना अपना कर्तव्य है. इधर भाजपा कहता है कि कांग्रेस को हराना मेरा दूसरा अहम कर्तव्य है. लेकिन वास्तविकता यह है कि ये दोनों पार्टियां धार्मिक कटटरता को पदवरिश करने एक दूसरे से होड़ लगाये बैठी है.

रामजन्म भूमि और बाबरी मसजिद विवाद और सांप्रदायिक दंगों के संबंध में जनता दल और उसके नेतृत्व वाले राष्ट्रीय मोर्चा ने जो रुख अपनाया है; वह भी निंदनीय ही है. जनता दल का उलाहन है कि कांग्रेस धार्मिक कटटरवादियों से हाथ मिलाती है. पर, वास्तविकता यह है कि जनतादल ने खुद अब्दुल्ला बुखारी से हाथ मिलाया है. इधर राष्ट्रीय मोर्चा ने भाजपा से चुनावी ताल में कर लिया है. राम जन्म भूमि और बाबरी मसजिद विवाद संबंधी जनतादल का वक्तव्य दीवार की बिल्ली की तरह है. वह बिल्ली जो दीवार पर बैठी है, चाहे इधर चाहे उधर कुद सकती है. जनतादल का वक्तव्य भी ऐसा ही है. हरियाणा की, जनतादल सरकार का भागीदार है भाजपा फिर, जनतादल की ईमानदारी और रीति नीति को समझाना कौन बड़ी कठिन बात है? भाजपा के समर्थन के बिना राष्ट्रीय मोर्चा सरकार एक क्षण के लिये भी सत्ता में नहीं रह सकती है. ऐसी हालत में क्या राष्ट्रीय मोर्चा सरकार इस विवाद का ईमानदारी के साथ समाधान कर सकती है? कदापि नहीं. यही कारण था कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार इस समस्या के समाधान करने में असमर्थन रही है.

धार्मिक कटटरता पर भाकपा और माकपा पार्टियां रोज ही आग उगलती रहती है. पर इन पार्टियों का इस तरह आग उगलना सिर्फ बाहरी दिखावा मात्र है. भाकपा केरल में कटटरवादी मुस्लिम लीग से गठबंधन किया है. ये दोनों जरूरत पड़ने पर याने चार सीट कमाने के लिये धर्मांध पार्टियों से गठबंधन कर लेती है.

विस्तृत व तेजी से होने लगा है. बल्क, कारण यह कि हमारे शासक वर्गों को अहसास हुआ कि हिन्दू राष्ट्रवादी भावनाओं के प्रचार से अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति होगी. और एक कारण, समाज में इसके लिए अनुकूल हालात का होना भी है.

अब हम देश में स्थित आर्थिक व राजनीतिक संकट का विवेचन करेंगे. साम्राज्यवाद आम संकट के तीसरे दौर में गले तक फंसा हुआ है. ऐसे में अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संकट के कारण रूस और अमेरिका तथा अन्य साम्राज्यवादी देश करीब–करीब दिवालिया पिटवाने की स्थिति को पहुंच गये हैं. ऐसी स्थिति में 19, अक्टूबर 1987 के शेयर बाजार का पतन तो अमेरिका की रीढ़ की हडडी में कंपकंपी पैदा कर दी है.

हमारे देश के औद्योगिक क्षेत्र तीव्रतर असुविधाओं से संत्रस्त है. रिजर्व बैंक के आंकडों को देखने से यह बात मालूम होती कि 1970–80 सालों के बीच मध्यम प्रकार के और बड़े उद्योगों के नफे का दर 12.6 प्रतिशत रहा तो 1986–87 सालों में नफे का दर 8.6 प्रतिशत तक गिर गया है. 1989–90 सालों में करीब एक हजार बड़े उद्योगों के नफे का दर चार प्रतिशत रहा तो 1990–91 सालों में वह दर इक्कीस प्रतिशत तक गिर गया है. देश में वित्तीय व्यवस्था की तरक्की का दर 1984–85 सालों में 9.7 प्रतिशत रहा तो 1989–90 में 8.4 प्रतिशत तक गिर गया है. कई छोटे उद्योग धंधे रूक गये हैं. कई उद्योग बीमार पड़ गये हैं और कई उद्योग बंध भी पड़ गये हैं.

ऋण उद्योगों की संख्या

साल	मध्यम और बड़े उद्योग	छोटे उद्योग	कुल
1976	289	8,000	8,289
1982	1622	58,551	60,173
1987	1712	1,58,226	1,59,938

रिजर्व बैंक के रिपोर्टों से मालूम होता है कि 1989–90 सालों में उत्पादन, उत्खनन (क्वारिइंग), माइनिंग आदि क्षेत्र तीव्रतर रूप से विचलित रहे थे.

कृषि के क्षेत्र में और तीव्र संकट था. सामंतवादी संबंधों के मूल रूप में बदलाव लाये बिना कृषि के इस संकट का समाधान करने के लिए शासक वर्गों ने बड़ी कोशिश की है. सन 1950 में ''हरित क्रांति'' अभियान शुरू किया गया है.

इस अभियान का प्रमुख उददेश्य खाद्यान्न कमी को दूर करना और औद्योगिक वस्तुओं के लिए गांवों में बाजार की सुविधा प्राप्त करना था. लेकिन, अच्छी पैदावार होने के बावजूद खाद्यान्नों की कमी बनी ही रही है. खाद्यान्नों का परिमाण लगातार घटता ही रहा है. तीस चालीस साल पहले औसतन एक दिन के लिए एक आदमी को 450 ग्राम खाद्यान्न मिलता था. लेकिन यह परिमाण 1988 साल में 442 ग्रामों तक गिर गया है. उत्पादन लागत साल दर साल 1.7 प्रतिशत के हिसाब से गिरता जा रहा है. इस तरह हरित क्रांति योजना की संकट में पड़ गई है. गरीब और मध्यम वर्ग के किसान तो इस हरित क्रांति के कारण और भी गरीब बन गये हैं.

इस हरित क्रांति योजना का दूसरा भाग, बाजार से संबंधित है. 1947 से होनेवाली तरक्की के बावजूद देश के करोडों आम जनता गरीबी का शिकार होती रही है. लेकिन इसी समय, देश की आबादी में 10 या 12 प्रतिशत रहते हुये अधिक आमदनी पानेवाला एक नया वर्ग उभर आया है. नगर के उन्नत मध्यम वर्ग तथा गांवों के उन्नत वर्ग इस नये उभरे वर्ग में आ जाते हैं देश में होनेवाली पूरी तरक्की, उत्पादन सब कुछ, इसी नये उभरे, देश की आबादी में 10–12 प्रतिशत रहनेवाला वर्ग की जरूरतों को नजर में रखकर–उत्पन्न किया जा रहा है. योजनाएं भी इसी वर्ग को नजर में रखकर बनाई जा रही है. योजना आयोग के एक सदस्य ने कहा–''उपभोक्ता माल, उद्योगों की तरक्की के लिए इंजन के समान है.''

इस तरह के विकास को लाने के लिए, विदेश पूंजी निवेश के लिए देश के दरवाजे पूरी तरह खोल दिये गये है. विदेशी तकनीक को ही नहीं, पूंजी का भी देश में आहवान हुआ है. इधर पूंजी का आहवान दे रहे हैं. और उधर नवीनता के नाम पर नये–नये मशीनों को लगाकर हजारों श्रमिकों को काम से निकाल रहे हैं. जिस अनुपात में नये उद्योग खुल रहे हैं, उस अनुपात में काम के नये अवसर मिल नहीं रहे हैं. साल दर साल आजीविका निर्माण स्थिति में गिरावट आ रही है. करीब तीन करोड़ बेकारों ने रोजगार दफ्तर में अपना नाम दर्ज कराया है. बेकारों की इस संख्या को कॉलेजों से उपधियां लेकर बाहर आनेवाले युवजन और बढा रहे है।.

देश ऋृण के दलदल में धंसता जा रही है. विदेशों से लिया कर्ज 1990 साल के प्रारंभ तक एक लाख करोड़ रूपयों से भी बढ़ गया है. राष्ट्रीय आय के एक तिहाई भाग विदेशी कर्जों के भुगताने के लिए ही खर्च हो रहा है. विदेशी विनिमय मुद्रा की बडी कमी है. हमारे पास जो जमा बचा है, वह सिर्फ चार हफ्तों की अपनी जरूरतों को पूरा कर सकता है. आठवीं योजना के लिए आवश्यक पूंजी का जमा करना भी नामुमकिन सा हो गया है. बजट का घाटा जताने की बात उपर के सुबूत को और पुष्ट करती है. इंदिरा गांधी हर चुनाव के पहले हिन्दू गुरूओं, बाबाओं और शंकराचार्यों के दर्शन अवश्य कर लेती थी. उनके द्वारा वोट कमाने की जुगत भी करती थी. इतना ही नहीं 1980 के चुनाव के पहले अब्दुल बुखारी को पत्र लिखकर इंदिरा आंधी ने उसकी मदद मांगी है. हिन्दू धार्मिक उन्माद और मुस्लिम धार्मिक उन्माद–दोनों उन्मादों को उकसाकर और दोनों पक्षों में यह भावना पैदाकर कि कांग्रेस ही एक मात्र रक्षक है, सत्ते में बने रहने की जुगत इंदिरा गांधी ने की है. उसकी हत्या के बाद, दिल्ली के हजारों सिक्कों का परसंहार करने में उसका अनुयायी हेच.के.एल. भगत का कम हाथ नहीं है. उस नर संहार का समर्थन करनेवाले के रूप में ही राजीव गांधी ने अपने राजनैतिक जीवन की शुरूआत की है, इस बात को भी हमें नहीं भूलना चाहिए.

शाबानो मुकददमे में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को मुस्लिम स्त्रियों के बिल से रदद करके कांग्रेस सरकार ने मुस्लिम कटटरवादियों को संतुष्ट किया है.राम जन्म भूमि और बाबरी मसजिद विवाद को दोनों पक्षों को स्वीकार योग्य रीति से, सामंजस्यपूर्ण समाधान करने के लिये ईमानदारी के साथ प्रयत्न न करने के अलावा हिन्दू धर्मांधों को पूचकारते हुये चुनाव में हिन्दुओं के वोट बटोरने का प्रयत्न राजीव गांधी सरकार ने किया है. राम जन्म भूमि मंदिर के दरवाजे खुल जाने के बाद उसे टीवी में दिखाया गया है. इस तरह दूरदर्शन में क्यों दिखाया गया है? यह सवाल राजीव गांधी से किये जाने पर उसने जवाब में बाताया – ''मुस्लिम स्त्रियों के बिल के द्वारा जो अपगौरव मिला है, उसे यह काम धो डालता है.'' राजीव गांधी के इस तरह कहने के बारे में उस समय के अंतरंग मंत्री अरूण नेहरू ने एक अखबार को दिये साक्षात्कार में कहा है. राम शिला रथ यात्रा के समय हिन्दू कटटरवादी मुस्लिम धर्म के खिलाफ नारे लगाते हुये सांप्रदायिक दंगे भड़काने पर भी बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात की कांग्रेसी सरकारों ने हिन्दू कटटरवादियों के प्रति कोई कड़ी कार्रवाई न करते हुये दंगे को और भडकाया है. और प्रोत्साहन दिया है. चुनाव के पहले उर्द्धू को राज्य के दूसरी भाषा का दर्जा देकर उत्तर प्रदेश सरकार ने मुसलमानों को पुचकारने का काम किया है. भागलपुर के दंगों में करीब एक हजार व्यक्ति मारे गये हैं. इन दंगों में कांग्रेसी नेताओं के खुले तौर पर भाग तेने की बात को अखबारों ने भी लिख डाली है. दूरदर्शन में रामायण और महाभारत को दिखाना हिन्दू कटटरवादियों को संतुष्ट रखने के लिये ही है. नवंबर दो तारीख को बजरंग दल के नेताओं ने राम जन्म भूमि मंदिर के शिलान्यास के अवसर पर वहां केसरिया झंडे को प्रतिष्टित किया था. यह कार्य विवादास्पद स्थल 586 में हुआ था. तो उत्तर प्रदेश सरकार ने, हिन्दुओं को खुश रखने के लिये एक अर्जी अदालत में दायर किया कि अदालत उक्त स्थल को

भाजपा एक ताकत के रूपमें उभरकर सामने आई है, वहां सांप्रदायिक दंगों का भडकना कोई इत्तफकिया बात नहीं है. भाजपा ने यह आश्वासन के बावजूद भाजपा ने राम जन्म भूमि मसले को चुनावी मुददा बना दिया है. इसके बारे में पूछे जाने पर कह दिया कि दूसरी पार्टियां अगर आलोचना करेंगी तो उत्तर देना की पडता है. इस तरह ''उत्तर देने'' के बहाने वह अपनी धर्मांधता को प्रकट कर रहा है. दूसरी तरफ अपने चुनावी घोषणा पत्र में लिख लिया है कि कांग्रेस सरकार ने राम जन्म भूमि मदिर को सोमनाथ मंदिर की तरह उदार नही किया है. अपने घोषणा पत्र में इस तरह लिखकर भाजपा ने राम जन्म भूमि मसले को जरूर चुनावी मुददा बना दिया है. इसके अलावा अल्प संख्यकों के अधिकारों को पैरों तले कुचल डालने के उददेश्य से अपने चुनावी घोषणा पत्र में लिख लिया कि मुसलमान जहां अल्पसंख्यक थे वहां के अल्प संख्यकों के अधिकारों के आयोग को मानव अधिकारों के कमीशन के रूप में बदल डालने और मुसलमान अधिक संख्या में रहनेवाले कश्मीर राज्य को अलग अधिकार प्रदान करनेवाले संविधान के धारा 370 को रद्द करने की हामी दी गई है. भाजपा पार्टी चालों द्वारा प्रधान मंत्री पद के लिए योग्य समझे जानेवाला वाजपेई ने कहा – ''बाबरी मसजिद को और जगह बनाना ही उचित कार्य है.'' देवीलाल के 75वीं वर्षगांठ समारोहमें बोलते हुये भाजपा के उप अध्यक्ष विजय राजे सिंधिया ने राम जन्म भूमि मंदिर हिन्दुओं को सौंप देने की विज्ञप्ति की है. हर एक भाजपा नेता यही कहता है कि वह हिन्दु होने का गर्व कर रहा है. भाजपा और उससे जुडे हुये अन्य संगठन, अपनी एक खास योजना के अनुसार काम कर रहे है. इनका असली मकसद यह है कि भारत के शासन का बागडोर अपने हाथ में लेकर उसे हिन्दू राज्य बना दिया जाय. इसके लिये हिन्दू धार्मिक भावनाओं को उक्साकर दंगे भडकाना और इस तरह हिन्दुओं के वोटों को अपने पक्ष में कर लेना तथा हिन्दुओं में अपनी वोट बुनियाद को ऊंचा उठाना–चाहते है. विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ–इनका राजनैतिक प्रतिनिधि है भाजपा.

पिछले चालीस साल के अपने शासन काल में कांग्रेस ने देश की आम जनता को दरिद्र से दरिद्रतर बना दिया है. अपने सभी वादों को झूठें साबित कर लिया है. जब यह बात लोगों पर पूरी तरह प्रकट हो गई तो अपने लिये कोई अन्य मार्ग न पाकर, लोगों में धार्मिक उन्माद को जगाकर वोट बटोरने में कांग्रेस ने भाजपा से होड़ लगाई है. और दूसरी तरफ मुस्लिमों के वोटों पर भी हाथ फेरने के उद्देश्य से मुस्लिम धार्मिक उन्माद को रियायतें देकर उसे पुचकारने लगी है. यह सिर्फ हाल की बाज नहीं है, पहले से ही कांग्रेस धार्मिक उन्माद को पाल पोसकर परवरिश करनेवाली संस्था साबित हुई है. आपातकाल में आर एस. एस. के नेता बालासाहब देवरस ने इंदिरा गांधी को पत्र लिखकर अपना समर्थन दुगुना और तिगुना हो रहा है. इसके अलावा खाड़ी संकट के कारण अतिरिक्त भार वहन के लिए करीब 5 हजार करोड़ रूपयों को खर्च करना पडा है. इन सब कारणों से विदेशों की नजर में भारत का साख बिलकुल गिर गया है. झटपट अंतर राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज लेने की स्थिति आ पडी है. वर्तमान वित्तीय संकट का और बढ़ने की संभावना है. इस संकट का कम होने की उम्मीद बिलकुल नहीं है. इस तरह रोज–रोज गहराता वित्तीय संकट के साथ–साथ राजनैतिक संकट भी देश में गाढतर होता जा रहा है.

अब इस राजनैतिक संकट का मोटे तौर से विवेचन करेंगे:

देश में राजनैतिक संकट निम्नलिखित रूपों में प्रकट हो रहा है. पहला शासक वर्गो के बीच के द्वंद्व के रूप में, दूसरा शासक वर्गों के खिलाफ क्रांतिकारी शक्तियों द्वारा सामंतवादी विरोधी संघर्षो के रूप में और तीसरा जातियां अपनी मक्ति के लिए करनेवाले जाति मुक्ति संघर्षों के रूप में इन्ही तीन रूपों में प्रस्तुत राजनैतिक संकट प्रकट हो रहा है.

भारत शासक वर्ग के खिलाफ पंजाब, कश्मीर, असम और पूर्वोत्तर भारत की जातियां बडी वीरता के साथ लड रही है. 1970 दशक के अंतिम चरण में शुय हुआ पंजाब जन संघर्ष केन्द्र सरकार के क्रूर और अमानवीय दमन के बावजूद दिन ब दिन बुलंद होता ही जा रहा है. 1984 में, स्वर्ण मंदिर पर ''ऑपरेशन ब्लू स्टार'' कार्रवाई के बाद भी उनका संघर्ष जरा भी पीछे नहीं हटा है. उनका संघर्ष संकल्प और भी मजबूत हुआ है. उनकी संघर्षशीलता में जरा भी ढील नहीं आई है. इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने लोगों की सांप्रदायिक भावनाओं को भडकाकर, दिल्ली में हजारों सिक्कों का नरसंहार कराया है. इस नरमेध ने उनके संघर्ष संकल्प को और मजबूत बनाया है. केन्द्र में चाहे जो भी पार्टी राज करे–पंजाब जनता के न्यायपूर्ण संघर्ष पर क्रूरतर दमन चक्र चलाती ही रही है. पंजाब जनता की न्यायपूर्ण मांगों की पूर्ति कोई भी सरकार नहीं की है. उन मांगों की पूर्ति करने का उददेश्य भी इस शोषक–शासक वर्ग को नहीं है.

पिछले 43 सालों से कश्मीर की समस्या रावण की चिता की तरह जलती ही रही है. जब वह समस्या जटिल तर होती गई तो कश्मीरी जनता ने अपने जाति मुक्ति संघर्ष और जोरों से चलाना शुरू किया है.

असम की जनता ''उल्फा'' के नेतृत्व में भारत शासक वर्ग के खिलाफ उठ खडी हुई है. संघर्ष छेड़ दिया है. असम जन संघर्ष को दबा डालने के लिए, हाल ही में सत्ता में आई चन्द्रशेखर सरकार ने, असम राज्य की असम गण

परिषद सरकार को भंग करके वहां राष्ट्रपति शासन लागू किया है. इस तरह पूरे असम राज्य को सैनिक शिविर में परिणत कर दिया है.

क्रांतिकारी पार्टियां द्वारा आन्ध्र, दंडकारण्य और बिहार में नवजनवादी क्रांति को आदर्श बनाकर, सामंतवाद विरोधी संघर्ष चल रहे हैं. इन संघर्षों को दबा डालने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारें अपने अर्ध सैनिक बलों को भेजकर बडे पैमाने पर दमनकारी कार्रवाईयां चला रही है. फिर भी, केन्द्र और राज्य सरकारें उन संघर्षों को रोक नहीं पा रही हैं.

इधर शासक वर्ग पार्टियां आपसी विरोधताओं के कारण बेहद डांवाडोल रही है. अुर्जूवाई गुट अपनी आपसी विरोधताओं को शांति के साथ समाधान नहीं कर पा रहे है. और अपने विपक्षियों को भौतिक रूप से अंत कर रहे हैं. इसका प्रमुख उदाहरण, नुस्ली वाडिया पर रिलयंसवालों के हमले ही हैं. बुर्जूवाई गुटों के इन्ही विरोधताओं के कारण ऐसी स्थिति पैदा हुई है कि कन्द्र में किसी भी पार्टी की सरकार टिक नही रही है. अब तक परदे के पीछे रहकर कठपुतलों को खेलाने वाले बुर्जूआ अब एक दम मंच पर आकर साक्षात्कार दे रहे है और विपक्षी गुटों के तरपन्दार सरकार को गिरा रहे हैं.

सांप्रदायिक दंगे व अशांति शासक वर्गों की चुनावी योजनाओं के ही भाग हैं.

देश के राजनैतिक व वित्तीय संकट क्रमिक रूप से तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा है. इसी पूर्व भूमिका में शासक पक्ष पार्टियों के लिए–खासकर भाजपा के लिए–चुनावी जंग में धार्मिक उन्माद एक खास हथियार की तरह उपयोग में आ रहा है. उपरोक्त संकट से उत्पन्न जन संघर्षों को गुमराह करने अथवा गलत राह की ओर मोडने और उसे धार्मिक उन्माद का रूप देकर अपने अधिकार को सुदृढ़ व स्थाई बनाने तथा अपने एकाधिपत्य की स्थापना करने के लिए–शासक वर्ग पार्टियों का धार्मिक अशांति व सांप्रदायिक दंगे व धार्मिक उन्माद राजनैतिक और वित्तीय संकट से ही पैदा हुये हैं और राजनैतिक पार्टियों के बीच सत्ता पा जाने के लिए जो संघर्ष चल रहे हैं, वे भी इसीके एक भाग है.

1947 में, देश के विभाजन के समय हुये सांप्रदायिक दंगे और उथल–पुथल में हजारों लोग मौत के घाट उतार दिये गये थे. और लाखों लोग अपने घर द्वार से दूर हो, प्रवासी बन दूसरे प्रदेशों में जा बसे थे. लेकिन, 47 के बाद 60 दशक में जो सांप्रदायिक दंगे हुये थे और धार्मिक अशांति फैली थी, इसमें एक नया रवैया स्पष्ट दीख पड़ रहा है. वह है, चुनावी सालों में सबसे ज्यादा सांप्रदायिक दंगे होना. दिल्ली के पीपुल्स युनियन फर डेमाक्रटिक रायटस मसजिद में रखी गई है? उन्हे वहां से हटाकर धार्मिक मेल मिलाप की रक्षा करनी है. कदाचित अक्षय ब्रहमचारी का उक्त अनुरोध कार्य रूप में परिणत होता यदि जिला दण्डाधिकारी (मैजिस्ट्रेट) के.के.. नायर उन मूर्तियों को वहां से हटाने में बाधा न डालता. यहां ध्यान देने लायक बाज यह है कि बाद में यही नायर अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर, जन संघ का उम्मीदवार बनकर चुनाव लडने तैयार हुआ था. उस दिन से मसजिद का दार मुसलमानों के लिये बंद हुआ था. पर, हिन्दुओं के पूजा पाठ के लिये, पुजारियों के वास्ते द्वार खुला था.

तीन दशकों से ताले पडे बाबरी मसजिद को हिन्दू मात्र के लिये खोल देने की याचिका को, उमेश चन्द्र पांडे नामक एक फैजाबादी वकील ने 25, जनवरी 1986 को मुन्सिफ अदालत में दे दी थी. जिस पर उक्त अदालत के जजने ''चालीस मिनट'' की सुनवाई के बाद ताला खोलने के लिये सरकार को आदेश दिया था. बाबरी मसजिद के ताला खोल देने की पूरी घटना को टीवी में दिखाया भी गया था. इस से यह बात आसानी से समझ में आ जाती कि उक्त आदेश के पीछे सरकार का कितना हाथ था.

दूसरी तरफ हिन्दू धार्मिक उन्मादवादी व कटटरवादी संस्थायें – जैसे विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि संस्थाये, राम जन्म भूमि मुक्ति के लिये, 1984 से ही आंदोलन चला रही है. उसी साल अप्रैल में हुई धर्म संसद ने राम जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन किया है. फिर, 1985 में राम जानकी रथ यात्रा शुरू की हैं. 1986 में, हिन्दू यात्रा के लिये राम जन्म भूमि के द्वार खोल देने के बाद इधर मुस्लिम धर्मांध व कटटरवादियों की गतिविधियां भी तेज हुई हैं. फिर बाबरी मसजिद कार्यकारिणी समिति का गठन हुआ. बजरंग दल और शिव सेना के विरोध में ''आदम सेना'' का गठन भी किया गया है. इसके बाद 1989 फरवरी के कुभ मेले में जो महा संत सम्मेलन हुआ, उसमें निर्णय लिया गया कि अयोध्या में राम जन्म भूमि मंदिर का निर्माण किया जाय. उसी साल मई महीने में हुई और एक संज सम्मेलन में मंदिर निर्माण के लिये कार्यक्रम का निर्णय हुआ. इसके बाद राम शिला पूजाये और राम शिला यात्राएं आरंभ हुई है. फिर दोनों तरफ धर्माता और धार्मिक उन्माद खतरे की सीमाएं पार कर गई हैं. पहले से ही हिन्दू धार्मिक उन्माद का आधार रहा है भाजपा (1977 के पहले जन संघ) पार्टी 1984 के चुनाव में हार खाने के बाद अपने गांधीवादी समाजवादी के नकाब को फाड़ डालकर खालिस हिन्दू धार्मिक पार्टी के रूप में सामने आई है भाजपा पार्टी. इसने ''पाजिटिव सेक्युलरिज्म'' के नाम पर हिन्दू धार्मिक उन्माद को खुल्लम खुल्ला सामने ला खडा किया है और राम जन्म भूमि हिन्दुओं को मिलने के पक्ष में अपना वक्तव्य प्रकाशित किया है. तथा अपनी धार्मिक कटटरता का सबूत देते हुये भाजपा के नेताओं ने राम शिला पूजाओं में भाग लिया है. हिन्दी भाषा–भाषी राज्यों में जहां

था. अनुसंधायकों ने निर्णय दिया कि ''जिस साल राम जन्म भूमि मंदिर गिरा गया बताते है (1528) तब तुलसीदास की उम्र तीस साल की होगी. उनकी रचनाओं में राम जन्म भूमि या मंदिर का जिक्र नहीं हुआ है. अगर राम जन्म भूमि मंदिर सचमुच होता और वह गिराया जाता तो तुलसीदास अपनी रचनाओं में उसका जिक्र जरूर करता है.

बाबर ने अपनी यादों को ''बाबर नामा'' के नाम से फारसी भाषा में ग्रंथस्थ किया है. राम जन्म भूमि मंदिर को अगर गिरा दिया होता तो–दूसरे धर्मों पर विजय के रूप में इस घटना का वर्णन ''बाबर नामा'' में जरूर किया होता है. पर ''बाबर नामा'' में इसका जिक्र बिलकुल नहीं है.

और एक तर्क इस प्रकार है कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा इस मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया है. पर तीसरी शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक अयोघ्या में या उसके आसपास लोगों के निवास करने का कुछ भी आधार नहीं है. यह बात भारत पुराजत्वीय संस्था ने प्रकट की है. गुप्त वंश के राजाओं ने उत्तर भारत पर चौथी ईसवी से लेकर छटवीं ईसवीं तक शासन किया है.

राम जन्म भूमि मंदिर कहानी बिलकुल मनगढंत है. इस सचाई को जानने के लिये ऊपर दिये तीनों संदर्भ काफी है. प्रमुख इतिहासकार प्रोफेसर आर.एस. शर्मा ने कह दिया कि आज हम जिस स्थान को अयोध्या कह रहे है, अगर उसी को राम का जन्म स्थान होने का दावा करते हैं तो–आज हमारे पास जो ऐतिहासिक सबूत मौजूद है उसके आधार पर इस बात पर शंका करने की नौबत आ जाती है कि उक्त स्थान पर राम नाम का कोई ऐतिहासिक व्यक्ति जीवित था.

जब हिन्दू कटटरवादी जान गये कि उन्होने जो ऐतिहासिक सबूत पेश किये है, वे सबके सब बेकार प बेबुनियाद साबित हुये हैं तो उन्होने कह दिया कि विश्वास व आस्था का कोई सबूत नहीं होता. राम जन्म भूमि करोड़ों हिन्दूओं का विश्वास है. अंत में उन्होने अपने घिनौने चेहरे पर से परदा उठाते हुये कहा – ''जो बलवान है, राज उसी का है.'' इस तरह इनके सब वाद व दलीले धार्मिक उन्माद की तीव्रता को प्रकट करते हैं.

इस तरह, विश्वासों व मनगढंत कहानियों पर निर्भर हिन्दू कटटरवादी बाईस दिसंबर 1949 रात को बाबरी मसजिद में घुसकर वहां हिन्दू देवताओं की मूर्तियों को रख आये हैं. वहां पहरे पर तैनात मालू प्रसाद नामक एक कांस्टेबल ने इस बात को अपने एफ.आईआर में दर्ज भी किया है. इसके बहुत पहले ही याने 1946 के मार्च महीने में फैजाबाद के सिविल जॅज ने यह निर्णय दिया कि ''उक्त मसजिद शिया और सुन्नी मुसलमानों की आम संपती हैं.'' उस समय के फैजाबाद जिला कांग्रेस नेता अक्षय ब्रहमचारी ने उस समय के राज्य मुख्य मंत्री गोविन्द वल्लभ पंत से अनुरोध किया कि बाईस दिसंबर को, जो मूर्तियां बलात

(पीयुडीआर) वालों ने हाल ही में जो पर्चा प्रकाशित किया था, उसमें सांप्रदायिक दंगों से संबंधित ब्यौरा दिया गया है. उसे हम नीचे दे रहे है।.

साल	***घटनाओं की संख्या***	***मरनेवालों की संख्या***
1960–63	***343***	***181***
1963–64	***1125***	***1783***
1965–67	***326***	***92***
1967–68	***484***	***290***
1968–71	***1091***	***869***
1971–72	***512***	***600***
1972–76	***864***	
1976–77	***30***	
1977–79	***490***	***207***
1979–80	***229***	***272***
1980–83	***1597***	***936***
1984	***600***	***3500***
1985–88	***2400***	***1600***

चुनाव वर्ष

उपरोक्त ब्यौरे को (आंकडों को) देखने से यही तो मालूम होता है कि चुनावों और सांप्रदायिक दंगों के बीच बड़े नजदीक का रिश्ता है. इसे देखने के बाद हम कह सकते है कि शासक पक्ष की सभी राजनैतिक पार्टियां सांप्रदायिक अशांति व दंगों द्वारा कमाई ताकत और साख को चुनावों द्वारा संगठित कर लेती है और चुनावों द्वारा हथियाया ताकत और साख को सांप्रदायिक अशांति व दंगों द्वारा संगठित कर लेती है.

इन सांप्रदायिक दंगों व धार्मिक अशांति के क्या कारण थे? देश के शासक वर्ग याने दलाल बूर्जुआ वर्ग तथा सामंती वर्ग–अपने शोषण को सुचारू ढंग से चलाने के लिए जिन नीतियों को अमल में ला रहे हैं, उन नीतियों से तथि उन नीतियों से संबंधित शोषण से देश की तरक्की बिलकुल नहीं हो रही है. तरक्की के रास्ते में ये नीतियां रोडें की तरह खडी है. घोर दरिद्रता के कारण जनता की बड़ी बुरी हालत होती जा रही है. दूसरी तरफ पूंजीपति जनता को लूटने के लिए आपस में एक दूसरे से होड़ लगाये बैठे हैं. इस होड़ में विजयी होने के लिए विभिन्न दर्मों और जातियों के लोगों को भड़काते हैं और उकसाते है कि वे आपस में एक दूसरे से लडते रहे. उन्हे ऐसा महसूस कराते हैं कि

उनकी गरीबी का कारण दूसरे धर्मवाले हैं, दूसरे जातिवाले हैं. अपने लिए उपयोगी होनेवाले सभी अवसरों को दूसरे धर्मवाले या दूसरे जातिवाले हडप रहे हैं–शोषक शासक वर्ग ऐसी ही भावनाये लोगों में प्रचार करते हुये धर्म से धर्म, जाति से जाति को भिड़ाते है. शासक वर्ग पार्टियों के ऐसे प्रचार व हरकतों का शिकार नगरों में रहनेवाले पेटी बूर्जुआ समुदाय और विद्यार्थी और युवजन है.

शासक पक्ष पार्टियां, लोगों को अपनी गिरफ्त में रखने तथा अपने वोट बैंक को सुरक्षित रखने व अपने अधिकार को बनाये रखने के लिए आजकल धार्मिक उन्माद को एक शक्तिशाली हथियार की तरह इस्तेमाल कर रही हैं. पिछले चालीस वर्षों से ये पार्टियां गला फड़ कर कह रही है, हामियां बरसा रही है कि ''समाजवादी व्यवस्था कायम करेंगे. बेकारी और गरीबी को दूर भगायेंगी. बीस सूत्री कार्यक्रम को अमल करेंगे. गांधीवादी समाजवाद को लायेंगी.'' पर इन पार्टियों की सभी वादें हामियां निर्मूल साबित हो जाने से लोग अपनी मौलिक समस्याओं के समाधान के लिये संघर्ष के रास्ते पर आ खडे हुये तो उन्हे गुमराह करने. उस रास्ते से विचलित करने धर्मांधता रूपी हथियार का भरपूर इस्तेमाल कर रही है. पिछले 40 वर्षों से देश पर शासन करनेवाली कांग्रेस, नवंबर के चुनाव में केन्द्र में सत्ते पे आया जनता दल, भाजपा, माकपा और भाकपा–ये सभी पार्टियां कमोबेशी मात्रा में, अपने निहित स्वार्थों की रक्षा के लिए धार्मिक उन्माद का प्राश्रय लेती ही रही है. खासकर इंदिरा कांग्रेस आरैर भाजपा (इसकी अन्य शाखाएं) पार्टियों ने हिन्दू धार्मिक उन्माद को उक्साने व बढ़ावा देने के लिये कंधे से कंधा मिलाकर काम किया है. इसी पूर्व भूमिका को लेकर–''राम जन्म भूमि–बाबरी मस्जिद'' समस्या उभरकर मंच पर आ उपस्थित हुई है तथा उग्र रूप धारण करके इसने हाल ही में सैकडों बेकसूर लोगों की जाने ली है.

इन दिनों पूरे भारत देश में–खासकर उत्तर भारत के हिन्दी भाषा भाषी राज्यों में व्याप्त धार्मिक अशांति के फैलाने तथा सैकडों बेकसूर लोगों को मौत के घाट उतारने के जिम्मेदार राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद का झगडा है. इस झगडे के मूल कारणों तथा हिन्दू कटटरवादियों की दलीलों को यहां विवेचन करेंगे.

हिन्दू कटटरवादी संगठन विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि का कहना है कि उत्तर प्रदेश, फैजाबाद हिले के अयोध्या या अवध राम की जन्म भूमि है.. वहां गुप्त राजाओं ने राम मंदिर का पुननिर्माण कराया है.. (इसे पहले पहल निर्माण करनेवाले कौन था? पता नहीं) सन 1528 में, मुगल बादशाह बाबर का प्रतिनिधि मीर बभी ने उस मंदिर को गिराकर उसी स्थान पर बाबरी मसजिद का निर्माण किया है. यह है, हिन्दू कटटरवादी विहिप (विश्व हिन्दू परिषद), बजरंग दल और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के दलील. इनका कहना है कि ''इतिहास में हिन्दुओं के साथ जो बेइन्साफी बरती गई, उसे ठीक करने के लिये अब हम बाबरी मसजिद को गिराकर उसी स्थान पर राम मंदिर का निर्माण करेंगे.'' अपनी इस दलील को पुष्ट करने के लिए हिन्दू कटटरवादी जो दस्तावेज या पूर्वलेखन प्रस्तुत कर रहे हैं, वे सबके सब ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों की अथवा अधिकारियों की रचनाये है या बुर्जूआ इतिहासकारों की रचनाये है. सन 1857 में, जब पहली आजादी की लडाई चल रही थी, उस समय, अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लेने को उचित कार्य बताने वाले कर्नल स्लीमन ने राम जन्म भूमि बाबरी मसजिद को पहली बार इतिहास में स्थान दिया है. कटटर हिन्दू मुख्यतः इसी ब्रिटिश अधिकारी के लेखनों को प्रमाण के रूप में पेश करते हैं.

बाबरी मसजिद के अहाते में ऊंचा चबूतरा वाला एक मंडप है. इसी मंडप की जगह पर राम का जन्म हुइा है, ऐसी एक दलील पेश करते हैं. लेकिन, अयोध्या के राम मंदिरों के हर एक पुजारी यही दावा करता है कि उसी का मंदिर राम की असली जन्म भूमि है.

राम जन्म भूमि मंदिर के महंत कहलानेवाला रघुवीर दास ने उपरोक्त चबुतरा वाले मंडप के स्थान पर मंदिर बनाने की इजाजत मांगते हुये 19, जनवरी 1985 को फैजाबाद सब जज अदालत में एक प्रार्थना पत्र दाखिल किया था. ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन के अधिकारियों और इतिहासकारों के लेखनों पर आधारित रघुवीर दास की दलीलों को मानते हुये भी उक्त सब जज ने राम मंदिर बनाने की इजाजत इसलिये नहीं दी कि वह चबूतरा मसजिद के बिलकुल निकट है. इस पर महंत रघुवीर दा ने फैजाबाद के जिला जज के अदालत में अपील की याचिका दी है. जिला जज जे.इ.ए. छांबियर्स ने विवादग्रस्त स्थल को स्वयं देखा है. गेजिटीर्स में प्रकाशित कनेल स्लीमन के लेखनों पर आधारित रघुवीर दास के बाद–प्रवाद को सुना है. रघुवीर दास की सब दलीलों को जज ने उचित कहा है. हिन्दुओं के पवित्र स्थान पर बाबरी मसजिद का बनाना अन्यायपूर्ण और गलत काम बताया है. इतना मानते हुये भी उक्त जिला जज ने कह कि–अब बहुत देर हुई है. इस गलती को ठीक भी नहीं कर सकते. ''अब इस स्थान पर मंदिर बनाना भी उचित नहीं है. यथास्थिति को बनाये रखना ही ठीक है.''

अब हिन्दू धर्माध इन दोनों ब्रिटिश साम्राज्यवादी अधिकारियों का हवाला दे रहे हैं.

हिन्दू धर्माध और कटटरवादी किन दलीलों को पेश कर रहे हैं, उन्हे इतिहासकार अस्वीकार कर रहे हैं. इतिहासकारों का कहना है. कि–''इतिहास की कसौटी पर कसकर देखने पर ये दलीलें बेकार व बेबुनियाद निकली है.'' ''राम चरिज मानस'' के संत कवि तुलसी दास अयोध्या का निवासी था. बाबर जब अयोध्या से होकर अपना अभियान चला रहा था, उस समय तुलसीदास नौजवान